एक लड़का जिसे चित्रकारी पसंद थी



बेंजामिन वेस्ट

एक लड़का जिसे चित्रकारी पसंद थी



बेंजामिन वेस्ट

एक लड़का जिसे चित्रकारी पसंद थी



बेंजामिन वेस्ट



पैनसिल्वेनिया का वेस्ट परिवार एक बड़ा परिवार था.
परिवार में पहले माता और पिता आए.
उनके पुत्र ज़ॉन और थॉमस आए, फिर सैमुयल और जोसफ,
रेचल और सॉरा थे. उनके बाद हैन्ना, मैरी और एलिज़बेथ आए.
और सबसे अंतिम संतान थी बैंजमिन.

बैंजमिन दसवीं संतान थी. उसका जन्म 1738 में हुआ था.
उसके जन्म पर पादरी ने भविष्यवाणी की थी,
"यह लड़का एक दिन महान कार्य करेगा."
लेकिन पादरी ने यह न बताया था कि शिशु कब और कैसा महान कार्य करेगा.
इसलिए, उसकी महानता के पहले लक्षण की प्रतीक्षा करते हुए,
हर कोई उसका ध्यान रखता था.

अध्याय 1

एक लक्षण

जब बैंजमिन सात वर्ष का था, एक लक्षण दिखाई दिया.

एक दिन उसकी विवाहित बहन रेचल उनके घर आई हुई थी. रेचल अपनी नन्ही बच्ची को अपने साथ लाई थी. उसने बैंजमिन से कहा कि वह नन्ही सैल्ली का ध्यान रखे क्योंकि उसे माँ के साथ सैर करने जाना था.

बैंजमिन ने अप्रसन्न दृष्टि से उसे देखा. रेचल ने कहा, “वह सो रही है. तुम्हें तो बस उसका पालना हिलाना है और मक्खियों को भगाना है.”



रेचल माँ के साथ सैर करने चली गई.
बैंजमिन पालने को हिलाता रहा और मक्खियाँ उड़ाता रहा.
लेकिन उसका मन कर रहा था कि वह कुछ और करता.

समय बिताने के लिए वह छोटी बच्ची के चेहरे को ध्यान से देखने लगा.
अभी तक उसने किसी नन्हे बच्चे को इतनी निकटता से नहीं देखा था.
बच्ची की नाक कितनी छोटी थी!
उसकी पलकें कितनी लंबी थीं!
और अचानक एक प्रबल इच्छा बैंजमिन वैस्ट के मन में उत्पन्न हुई .
वह बच्ची का एक चित्र बनाना चाहता था!



वह जानता था कि उसे यह काम बड़ी जल्दी करना होगा.

माँ और रेचल कभी भी वापस आ सकते थे.

उसने चारों ओर देखा और उस वस्तु को ढूँढने लगा जिस से चित्र बनाया जा सकता था.

डेस्क पर पापा की हंस के पंख से बना एक कलम थी.

लेकिन, रुको! पापा के सिवाय कोई और इस कलम का उपयोग नहीं कर सकता था.

कुछ पलों के लिए बैंजमिन का हाथ हवा में रुका रहा.

फिर उसने कलम को उठाया और उसे स्याही में डुबोया.

उसके बाद बैंजमिन पिता के सब नियम भूल गया.

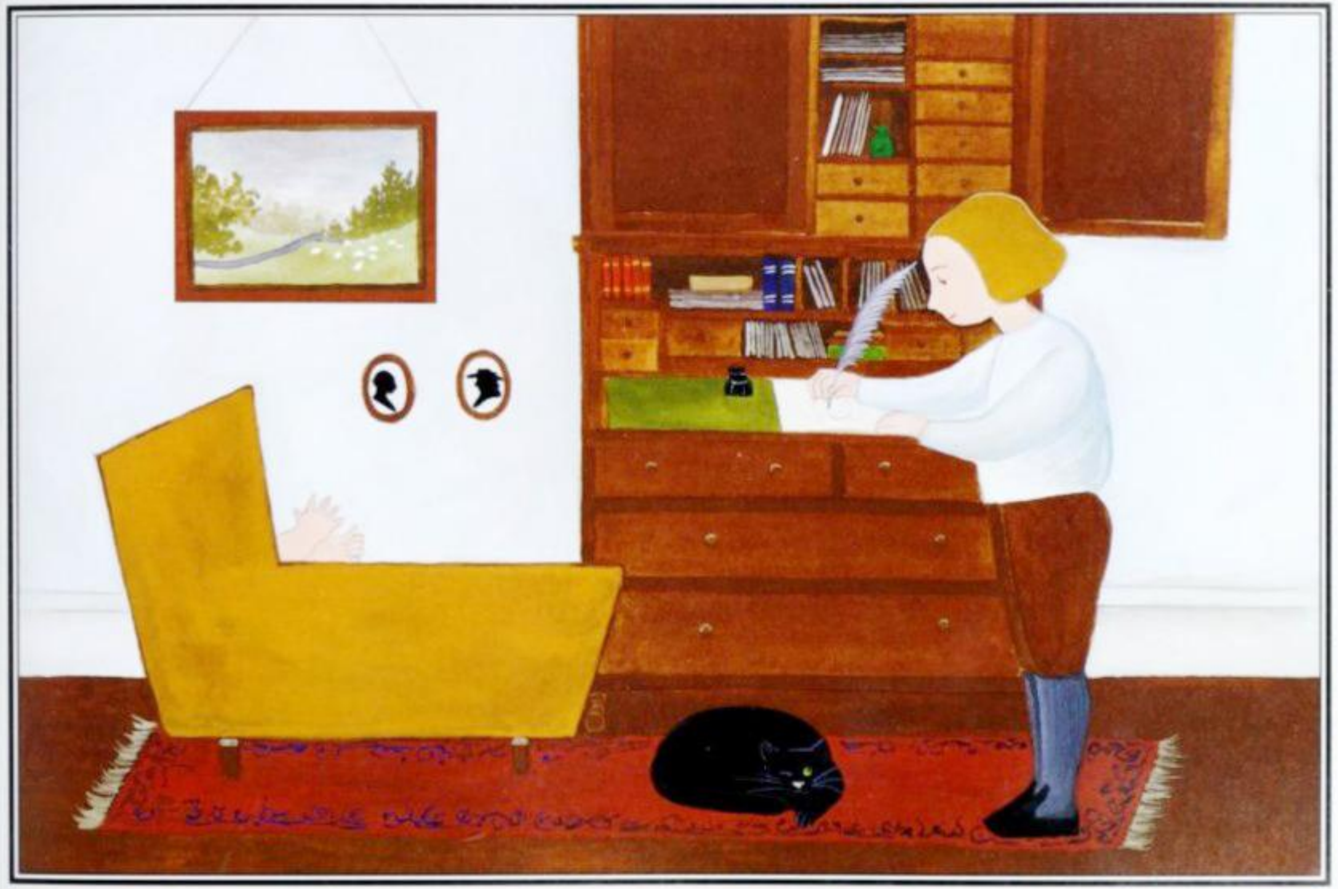
वह पालने को हिलाना भूल गया, मक्खियों को भगाना भूल गया.

चित्र बनाने के अतिरिक्त वह सब भूल गया.

उसका चित्र लगभग पूरा हो चुका था जब बच्ची जाग गई.

वह रोने लगी. जितनी ज़ोर से बैंजमिन पालने को हिला सकता था

उतनी ज़ोर वह हिलाने लगा. लेकिन सैल्ली का रोना बंद न हुआ. वह और ज़ोर से रोने लगी.



अब बैंजमिन को बगीचे से आती आवाज़ें सुनाई दीं.
माँ और रेचल लौट आए थे. बैंजमिन ने पालने को झुलाना बंद कर दिया.
उसने पंख से बनी कलम को कलमदान में रख दिया और अपना चित्र उठा लिया.
तभी माँ और रेचल भीतर आए.
बच्ची को गोद में उठाने के लिए रेचल भागती हुई पालने के पास आई.
लेकिन माँ बैंजमिन को ध्यान से देख रही थी.
“बैंजमिन! अपनी पीठ के पीछे तुम क्या छिपा रहे हो?”

बैंजमिन को लगा कि उसका चेहरा लाल हो गया था.
उसने चित्र माँ को पकड़ा दिया.
फिर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं.
माँ को चित्र देखते हुए वह देखने न चाहता था.
वह अपने कान भी बंद कर लेना चाहता था.
वह जानता था कि माँ कहेंगी, “क्या मूर्खता है!”
और कलम के बारे में भी पूछेंगी!



लंबे समय तक कमरे में शांति बनी रही.

फिर माँ ने धीमी आवाज़ में कहा,

“रेचल यह देखो, बैंजमिन ने हमारी नन्ही सैल्ली का चित्र बनाया है.”

बैंजमिन ने अपनी आँखें खोलीं. उसकी माँ और रेचल
उसके चित्र को एकटक देख रहीं थीं और दोनों मुस्करा रहीं थीं.

“मैं कहती हूँ, यह चित्र बिलकुल सैल्ली जैसा है,” रेचल ने कहा.

वह बैंजमिन की ओर मुड़ी. “तुम ने ऐसा चित्र कैसे बनाया.”

बैंजमिन ने कंधे उचकाए और विनीत दिखने का प्रयास किया,

जैसा एक क्वेकर लड़के दिखना चाहिए.

लेकिन मन ही मन वह अभिमान से फूल रहा था.

माँ और रेचल को उसका बनाया चित्र अच्छा लगा था.

उस रात मिसेज़ वैस्ट ने मिस्टर वैस्ट से कहा,

“मुझे लगता है कि उसका बनाया चित्र उसकी महानता का एक लक्षण है.”

मिस्टर वैस्ट ने कहा, “तुम शायद सही हो. लेकिन समय ही सब बतायेगा.



अध्याय 2

इंडियंस

उस दिन के बाद बैंजमिन कभी भी अपनी नोटबुक और कलम के बिना दिखाई नहीं दिया. अन्य लड़के जब अपना समय मछली पकड़ने या खेलों में बिताते थे, बैंजमिन सिर्फ चित्र बनाता था. जो भी वस्तु उसे अच्छी लगती, चाहे वह गाय हो या गिलहरी, घर हो या पेड़, उसका वह चित्र बनाता था.



एक वर्ष बीत गया. एक दिन नदी किनारे बैठा वह एक रॉबिन (एक पक्षी) का चित्र बना रहा था. सहसा उसे लगा कि कोई चोरी-छिपे उसे देख रहा था. वहाँ जंगल में कौन था?

भालू? भेड़िया? शायद मीसिंग था, वह भूत जिसके बारे में इंडियन लोग कहानियाँ सुनाते थे.

बैंजमिन धीरे से घूमा. उसने पीछे देखा. दूर पेड़ों की छाया में उसे तीन चेहरे दिखाई दिए. इंडियन!

उसकी गर्दन के रोयें खड़े हो गए.

क्या वह लैनेपी थे जिनसे उनकी मित्रता थी?

या वह पश्चिम के भंयकर शॉनी थे?

बैंजमिन पत्थर समान स्थिर बैठा रहा. लंबे समय के बाद एक इंडियन जंगल से बाहर आया.



राहत की सांस लेते हुए बैंजमिन चिल्लाया, “ग्रे वुल्फ!”
ग्रे वुल्फ एक लैनेपि था और उसके परिवार का मित्र था.
उसका झोंपड़ा वैस्ट हाउस के पास था.
ग्रे वुल्फ और उसका परिवार अकसर अपनी टोकरियाँ बेचने के लिए
पिता की सराय में आया करता था.
बैंजमिन और ग्रे वुल्फ ने हाथ मिलाये. जैसे यह एक संकेत था,
जंगल में छिपे दो और लैनेपि बाहर आए.
वह बैंजमिन के बनाये चित्र को देखने लगे.
उत्तेजना में हाथ हिलाने लगे और अपनी भाषा में बात करने लगे.
“मीशका-मीशका,” वह बार-बार कहने लगे.
“मीशका का अर्थ क्या है?” बैंजमिन ने ग्रे वुल्फ से पूछा.
ग्रे वुल्फ ने रॉबिन के सीने की ओर संकेत किया.
“मीशका का अर्थ है, लाल. पक्षी का सीना लाल रंग का होना चाहिए.”
“मैं जानता हूँ,” बैंजमिन ने अपनी विवशता छिपाते हुए कहा.
“लेकिन मेरे पास लाल रंग नहीं है.”
ग्रे वुल्फ ने आश्चर्य से देखा, “रंग? रंग?” अचानक उसने कहा, “अह! रंग!
तुम्हें रंग चाहिए - मेरे साथ आओ!”



ग्रे वुल्फ बैंजमिन को नदी किनारे ले आया. दोनों इंडियन उनके पीछे चलते रहे.

वह उस जगह आए जहाँ नदी किनारे का मिट्टी लाल थी.

ग्रे वुल्फ ने बैंजमिन को एक खाली तूमड़ी दी. उसने मिट्टी की ओर इशारा किया.

“अना-बा,” उसने लैनेपि भाषा में कहा. फिर इंग्लिश में कहा, “यह ले लो.”

बैंजमिन ने झुक कर कुछ लाल मिट्ठी उठा ली.

फिर ग्रे वुल्फ ने उधर संकेत किया जहाँ पीली मिट्टी थी.

“अना-बा,” उसने कहा. बैंजमिन ने पीली मिट्टी भी उठा ली.

एक इंडियन ने दो कटोरों में मिट्टी के ढेले रखे.

एक लंबे, चिकने पत्थर से उसने उन ढेलों को पीस कर पाउडर बना दिया. फिर उसने अपने थैले से थोड़ी सी भालू की चर्बी निकाली और लाल मिट्टी के पाउडर में मिलाया. फिर चर्बी को पीली मिट्टी में मिलाया. इस तरह लाल और पीले रंग की पेस्ट बन गई. उसने दोनों कटोरे बैंजमिन को दिए. “यह हैं तुम्हारे रंग!”



बैंजमिन भागता हुआ घर आया.
उसकी माँ दरवाज़े पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी.
उसने चिल्लाकर कहा, “माँ! माँ!
ग्रे वुल्फ ने मुझे रंग बनाने सिखलाये.”
लेकिन माँ सुन नहीं रही थी. वह बहुत गुस्से में थी.
“बैंजमिन वैस्ट, तुम कहाँ थे?
घोड़ों को पानी और चारा देना तुम आज भूल गए.”
बैंजमिन का सिर झुक गया.
“मैं नदी के पास था, मैं एक चित्र.....”
उसने इंडियन और रंगों के बारे में माँ को दुबारा बताया.
जब उसकी बात समाप्त हुई तो माँ ने आह भरी.
“बैंजमिन, मैं कह रही हूँ चित्रकारी को लेकर तुम्हारी सनक
पता नहीं तुम्हें कहाँ ले जाएगी.”



तभी माँ ने बैंजमिन के हाथ में रॉबिन का चित्र देखा.

एक हल्की सी मुस्कान उनके होंठों पर दिखाई दी.

माँ ने कटोरों में रखे रंगों को देखा.

उनकी जांच की.

आखिरकार उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि तुम एक और रंग का उपयोग कर सकते हो."

मिसेज़ वैस्ट एक अलमारी को पास गई वहाँ से वह नील को एक टुकड़ा निकल कर लाईं, जिसका उपयोग वह ऊन रंगने के लिए करती थी.

बैंजमिन को वह टुकड़ा देते हुए उन्होंने कहा,

"अब तुम्हारे पास लाल, पीला और नीला रंग हैं. इन तीन रंगों को मिला कर तुम लगभग सभी रंग बना सकते हो."

उस रात बिस्तर में लेटते समय वह सोच रहा था कि पूरी लैंकेस्टर काउंटी में उससे भाग्यशाली कोई लड़का नहीं था.

उसके पास चित्र बनाने के लिए रंग थे!



अध्याय 3

बिल्ली

लेकिन अगली सुबह बैंजमिन को महसूस हुआ कि वह खास भाग्यशाली न था. रंगों को चित्रों में भरने का कोई उपाय उसके पास न था.

“उंगलियों से रंग लगाओ,” उसके भाई जोसफ ने कहा.

“पंख से बनी कलम का उपयोग करो,” उसके भाई सैमुअल ने कहा.

“शायद तुम उस ब्रश को इस्तेमाल कर सकते हो जिससे हम मक्खन लगाते हैं,” उसकी बहन मैरी ने सुझाव दिया.

बैंजमिन के हर भाई और बहन ने कोई न कोई तरीका बताया. लेकिन कोई उपाय काम न आया.



एक बार फिल्डैल्फिया से आया एक यात्री उसके पिता की सराय में ठहरा हुआ था. उसने बैंजमिन को चित्रों में रंग लगाते देखा.

"तुम्हें एक बालों वाली पेंसिल का उपयोग करना चाहिए," उस आदमी ने बैंजमिन से कहा.

"वह क्या होती है?" बैंजमिन ने पूछा.

हंस के पंख के सिरे पर ऊँट के बालों का ब्रश लगा होता है.

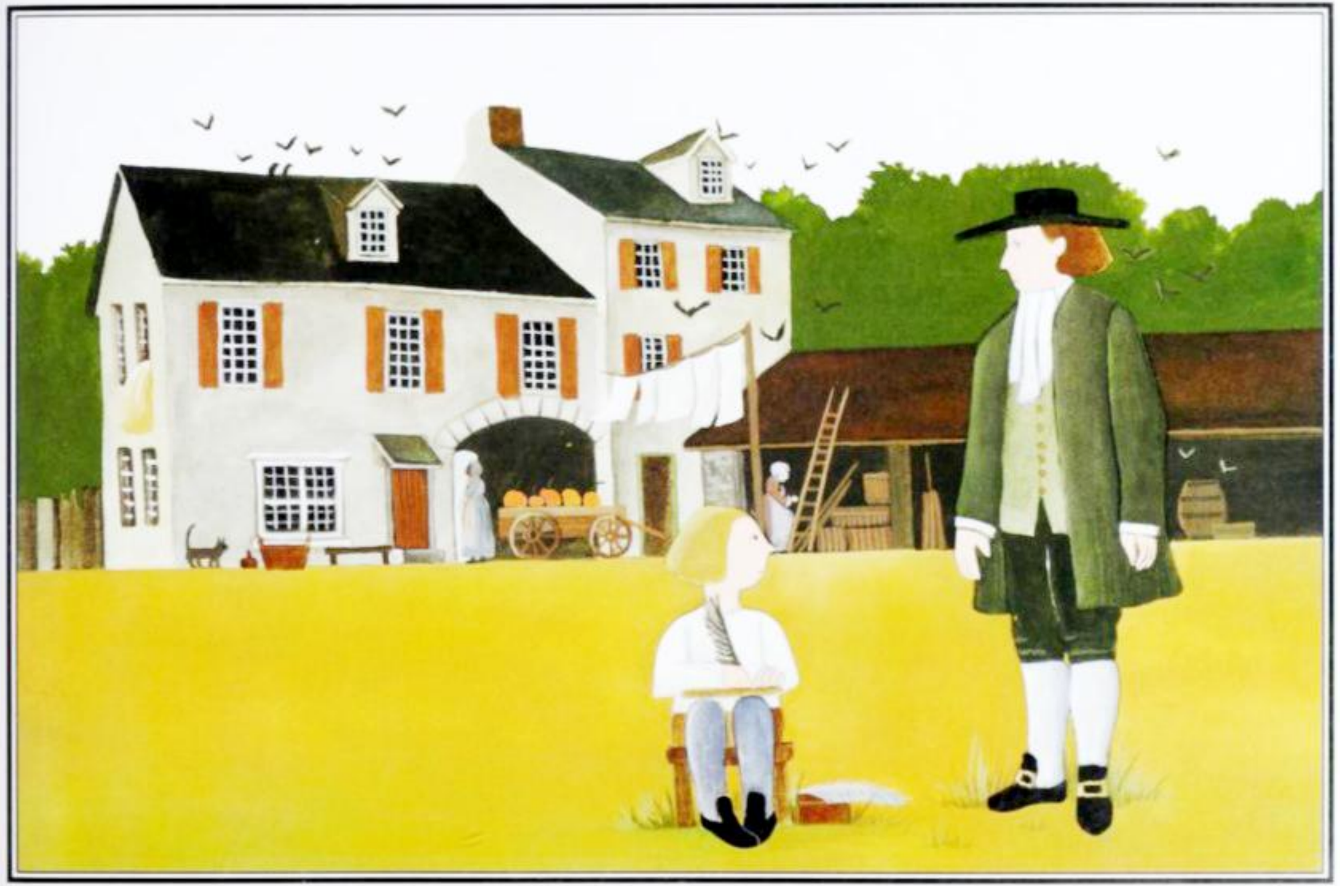
कलाकार उसी से चित्रों में रंग भरते हैं."

बैंजमिन को ऐसी किसी वस्तु की जानकारी न थी. लेकिन वह ऐसी पेंसिल पाना चाहता था. उसने उस यात्री से पूछा कि ऐसी पेंसिल उसे कहाँ से मिलेगी.

"तुम फिल्डैल्फिया में खरीद सकते हो," यात्री ने उत्तर दिया.

बैंजमिन अपने जीवन में फिल्डैल्फिया जैसी दूर जगह कभी गया ही न था.

उसे लगा कि बालों वाली पेंसिल पाने के विचार उसे भूलना होगा. उसने प्रयास किया पर कोई लाभ न हुआ. सपने में ही उसे ऊँट और बालों वाली पेंसिल दिखाई देती.



एक दिन बैंजमिन अपने परिवार की बिल्ली, ग्रिमैल्किन, का चित्र बना रहा था.
वह अपने आप से बातें करने लगा.
अरे, ग्रिमैल्किन की फर्र कितनी घनी है.
फिर कुछ पलों बाद कहा, अरे, इसकी पूँछ पर कितने बाल हैं.
धीरे-धीरे एक विचार बैंजमिन के मन में पनपने लगा.
उसने अपनी माँ की कैंची उठा ली.
उसने हंस का एक लंबा पंख ढूँढा और कुछ धागा.
उसने पुकारा, “ग्रिमैल्किन यहाँ आओ, बिल्ली यहाँ आओ.”
ग्रिमैल्किन को पता ही न था कि बैंजमिन क्या करने वाला था.
वह भाग कर बैंजमिन के पास आ गई.
बैंजमिन ने से पकड़ लिया और बड़ी फुर्ती से उसकी पूँछ के कुछ बाल काट लिए.
उन बालों को उसने पंख की नोक पर टिका कर
बड़ी सावधानी के साथ बांध दिया.
कुछ ही मिनटों में बैंजमिन वैस्ट के पास अपनी बालों वाली पेंसिल थी.



पर इस पेंसिल से वह थोड़े समय तक ही रंग कर पाया. कुछ समय तक रंग लगाने के बाद उसके बाल बिखर गए. बैंजमिन ने फिर से कैंची उठाई

एक बार फिर उसने कहा, “ग्रिमैल्किन यहाँ आओ, इधर आओ.”

दूसरी पेंसिल भी पहली पेंसिल जितनी ही चली.

लेकिन जब बैंजमिन ने फिर से ग्रिमैल्किन अपने पास बुलाया तो वह पलंग के नीचे छिप गई.

उसके बाद बिल्ली अधिकांश समय गोदाम में छिप कर रहती.

जब भी बैंजमिन को बालों वाली पेंसिल की ज़रुरत होती उसे ग्रिमैल्किन को ढूँढना पड़ता.



एक दिन मिस्टर वैस्ट ने ग्रिमैल्किन को चोरी से यार्ड में छिपते देखा.

“हमारी बिल्ली को कौन सी बीमारी हो गई है?” पिता ने बैंजमिन में पूछा.

“ऐसा लगता है कि कीड़ों ने उसे परेशान कर रखा है.”

बैंजमिन ने ग्रिमैल्किन को ध्यान से देखा.

बिल्ली बहुत दयनीय लग रही थी. पिछली तरफ के सारे बाल गायब थे और दोनों ओर कई जगह से बाल खत्म हो गए थे.

बैंजमिन जानता था कि ग्रिमैल्किन के गायब बाल उसकी पेंसिलों में लग चुके थे.

“पापा, यह मैंने किया है.” उसने कहा.

उसने पिता को सारी बात बता दी.

उसकी बात समाप्त हुई तो मिस्टर वैस्ट चुपचाप वहाँ से चले गए, वह क्रोधित लग रहे थे.



बैंजमिन जानता था कि उसे दंड मिलेगा.

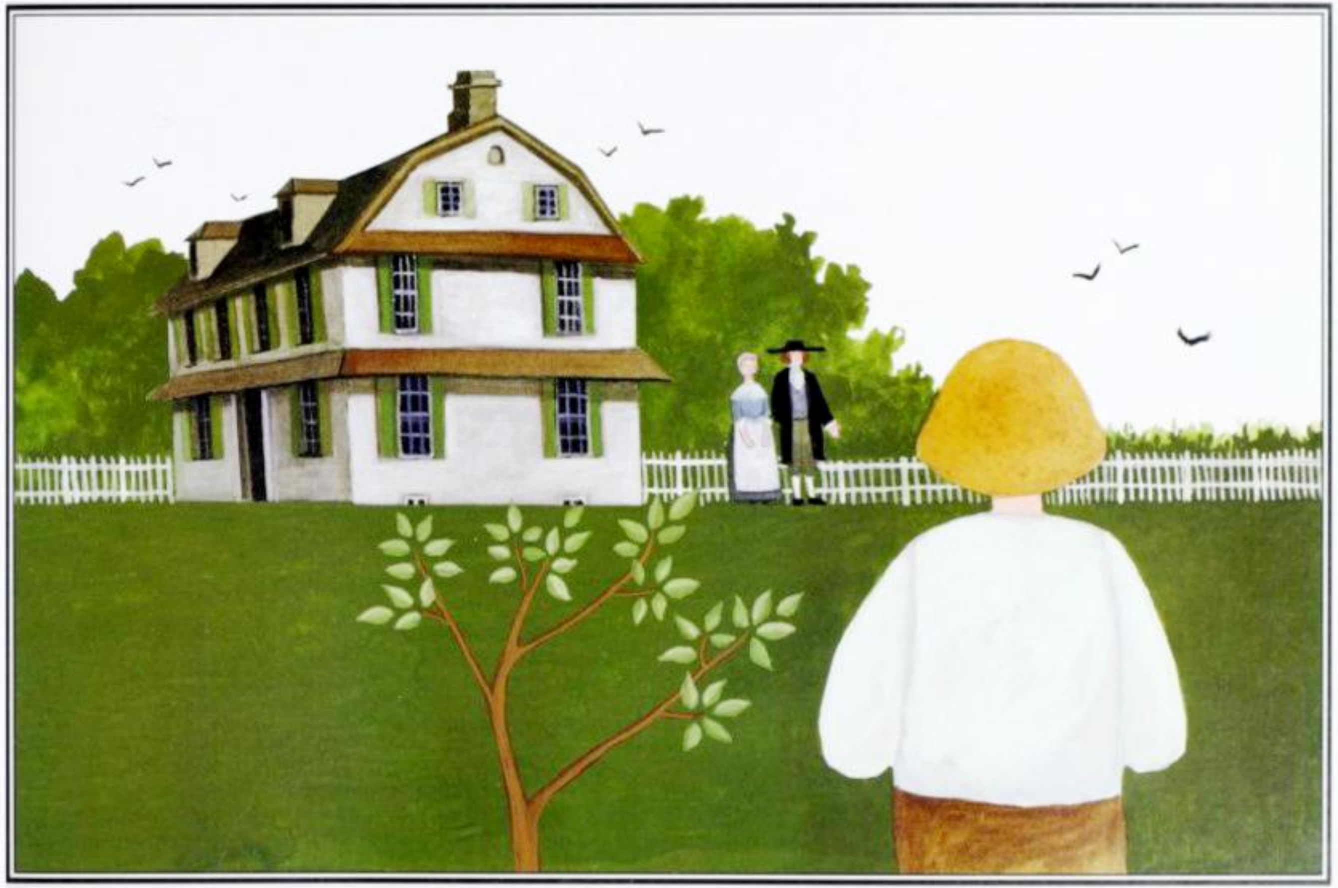
लेकिन वह यह नहीं जानता था कि दंड क्या होगा. चाबुक की मार वह सह सकता था. लेकिन अगर पिता ने चित्रकारी करने से मना कर दिया तो?

जब उसके पिता वापस आए तो माँ भी उनके साथ थी. वह एक जज के समान गंभीर दिखाई दे रहे थे. पिता कहने लगे,

"बैंजमिन, चित्र बनाने और उनमें रंग करने में तुम इतने खो गए हो कि तुम्हें कुछ भी सुझाई नहीं देता. इसके कारण तुम गलत काम भी करने लगे हो. इससे पहले कि बहुत देर हो जाए हमें कुछ करना होगा. इसलिए तुम्हारी माँ और मैंने मिलकर एक निर्णय लिया है. हम तुम्हें यहाँ से भेजने वाले हैं...."

बैंजमिन को लगा कि उसका सिर फट जाएगा.

यह मुझे घर से बाहर भेजने वाले हैं. उन बच्चों के साथ ऐसा ही होता है जो घर का काम नहीं करते और अपना बिल्ली की दुम के बाल काट लेते हैं. अब मुझे काम करने के लिए कहीं भेज दिया जाएगा. मेरा स्वामी अपनी इच्छा अनुसार मुझे मारेगा और भूखा रखेगा.



उसके माता-पिता उसके साथ ऐसा कैसे कर सकते थे.

क्या चित्र बनाना एक अपराध था.

बैंजमिन की आँखें आँसुओं से भर गईं.

उसके पिता जो कुछ कह रहे थे उसे सुनाई न दे रहा था,

जब तक कि उसे 'फिल्डैल्फिया' और 'कलाकार' शब्द सुनाई न दिए.

अचानक बैंजमिन को सब समझ आ गया. उसे भूखे रहने और मार खाने के लिए नहीं भेजा जा रहा था. वास्तविक कलाकारों से मिलने के लिए उसे फिल्डैल्फिया भेजा जा रहा था. अब उसे पता लगेगा कि वह एक अच्छा चित्रकार बन सकता था या नहीं. बैंजमिन को लग रहा था कि उसका जीवन बदलने वाला था.



और फिर क्या हुआ?

इस यात्रा ने बैंजमिन वैस्ट का जीवन बदल दिया. एक प्रसिद्ध चित्रकार, विलियम विलियम्स ने बैंजमिन के चित्र देखकर भविष्यवाणी की कि अगर वह चित्र बनाने का अभ्यास करता रहा तो एक दिन वह एक महान चित्रकार बन सकता था. उस दिन नौ साल के प्रसन्नचित लड़के को जीवन में पहली बार असली रंगों का डिब्बा और बालों वाली पेंसिल और कैनवस मिले.

जब बैंजमिन बारह वर्ष का था तब उसने अपना एक चित्र पहली बार एक डॉलर में बेचा. अठारह वर्ष के होते-होते चित्र बनाने का उसका व्यवसाय पैन्सिल्वेनिया में खूब फल-फूल रहा था. चित्रकारी का अध्ययन करने के लिए वह इटली आया और वहाँ से इंग्लैंड चला गया और वहीं बस गया. तीस वर्ष की आयु तक वह अमरीका और यूरोप में बहुत प्रसिद्ध हो गया था. अमरीका में जॉर्ज और मार्थी वाशिंगटन के पास भी उसके बनाये चित्र थे. बैंजमिन फ्रैंकलिन, जिनका चित्र उसने बनाया था, उसके मित्र थे और उसकी एक संतान के धर्मपिता भी थे.



इंग्लैंड में किंग जॉर्ज III बैंजमिन वैस्ट के चित्रों के प्रशंसक थे. किंग ने अपने महल में ही बैंजमिन को अपना स्टुडियो बनाने के जगह दी और वह दोनों अच्छे मित्र बन गए. लेकिन जब अमरीका में लोगों ने स्वतंत्रता के लिए युद्ध छेड़ दिया तब बैंजमिन वैस्ट ने स्वतंत्रता-सेनानियों का साथ दिया. किंग जॉर्ज के कुछ सलाहकारों ने किंग से कहा कि बैंजमिन को राजद्रोह के अपराध के लिए गिरफ्तार कर लेना चाहिए. लेकिन किंग ने कहा कि बैंजमिन को पूरा अधिकार था कि वह किस का साथ देना चाहता था. दोनों की मित्रता बनी रही.

बैंजमिन वैस्ट ने अपना शेष जीवन इंग्लैंड में बिताया. वह धनी और प्रसिद्ध था. लेकिन वह कभी नहीं भूला कि वह अमरीकी मूल का था. नये चित्रकारों के लिए, खासकर जो अमरीकी थे, उसके स्टुडियो के दरवाज़े सदा खुले रहते थे. बैंजमिन वैस्ट को अमरीकन चित्रकला का जनक भी कहा जाता है.

यह हैं उसके बनाये कुछ चित्र.









BOSTON PUBLIC LIBRARY